IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"उत्तराखंड के मीडिया छात्रों में फोटो पत्रकारिता के प्रति रुझान: एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन"

[1] सौरभ कुमार ,[2] डॉ .अजय भारद्वाज, [3]रजत पाण्डेय
[1] शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, [2] विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, [3]शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
[1] देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

शोध सारांश:

फोटो पत्रकारिता आज की पत्रकारिता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अंग बन चुकी है, जो समाचारों को दृश्य माध्यम से अधिक प्रभावशाली और जीवंत बनाती है। डिजिटल युग में इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखंड के विभिन्न मीडिया शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के बीच फोटो पत्रकारिता के प्रति उनकी रुचि, समझ और करियर संभावनाओं के प्रति रुझान का विश्लेषण करता है। इस शोध में उत्तराखंड राज्य के पत्रकारिता एवं जनसंचार से जुड़े कुल 100 छात्रों का सर्वेक्षण किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से छात्रों की फोटो पत्रकारिता संबंधी जागरूकता, शैक्षणिक पाठ्यक्रम की उपयुक्तता, तकनीकी प्रशिक्षण की उपलब्धता तथा इस क्षेत्र को करियर के रूप में अपनाने की प्रवृत्ति का मूल्यांकन किया गया। सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश छात्र फोटो पत्रकारिता में रुचि रखते हैं, परंतु पाठ्यक्रम में इसकी सीमित उपस्थिति और प्रशिक्षण की कमी उनके विकास में बाधक है। शोध इस दिशा में संस्थानों को पाठ्यक्रम में अधिक व्यावहारिकता और संसाधनों को जोड़ने का सुझाव देता है, जिससे छात्रों को व्यावसायिक दक्षता और भविष्य में अवसर मिल सकें।

कूट शब्द - फोटो पत्रकारिता, मीडिया शिक्षा, उत्तराखंड के मीडिया संस्थान, व्यावहारिक प्रशिक्षण, तकनीकी संसाधन, दृश्य संप्रेषण

भूमिका:

फोटो पत्रकारिता आधुनिक मीडिया परिदृश्य का एक सशक्त और प्रभावशाली माध्यम है, जो किसी भी समाचार को केवल शब्दों तक सीमित न रखकर, उसे दृश्यों के माध्यम से अधिक सजीव, संवेदनशील और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करती है। यह दृश्य संप्रेषण का वह रूप है, जो पाठक या दर्शक को घटना के भावनात्मक और यथार्थ पक्ष से सीधे जोड़ता है। आज जब डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, तब फोटो पत्रकारिता की प्रासंगिकता और भी अधिक हो गई है।[1] उत्तराखंड जैसे राज्य में, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता और भौगोलिक जटिलताओं के लिए प्रसिद्ध है, वहां फोटो पत्रकारिता की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक और महत्वपूर्ण हैं। प्राकृतिक आपदाएँ, धार्मिक आयोजन, लोकसंस्कृति, पर्यटन और ग्रामीण जीवन जैसे विषय, इस क्षेत्र को फोटो पत्रकारों के लिए एक समृद्ध कार्यक्षेत्र बनाते हैं।

[1] उपाध्याय डॉ. अनिल कुमार-पत्रकारिता और जनसंचार: सिद्धांत एवं विकास, भारती प्रकाशन, वाराणसी-2005 (पृष्ठ 7)

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखंड के विभिन्न मीडिया शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के बीच फोटो पत्रकारिता के प्रति उनकी समझ, अभिरुचि और रुझान का मूल्यांकन करने का प्रयास है। यह अध्ययन इस बात की भी पड़ताल करता है कि क्या वर्तमान पत्रकारिता पाठ्यक्रमों में फोटो पत्रकारिता को पर्याप्त महत्व और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। यह शोध न केवल छात्रों के दृष्टिकोण को उजागर करता है, बल्कि मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक सुधारों की ओर भी संकेत करता है।

शोध के उद्देश्य:

1. उत्तराखंड के मीडिया छात्रों में फोटो पत्रकारिता के प्रति अभिरुचि और जागरूकता का अध्ययन करना।
2. छात्रों द्वारा फोटो पत्रकारिता को करियर विकल्प के रूप में अपनाने की प्रवृत्ति और उससे जुड़ी संभावनाओं का विश्लेषण करना।

साहित्यिक सर्वेक्षण:

साहित्यिक सर्वेक्षण के आधार पर पता चलता है कि मेरे शोध विषय "उत्तराखंड के मीडिया छात्रों में फोटो पत्रकारिता के प्रति रुझान: एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन" से संबंधित कोई शोध कार्य मेरे संज्ञान में नहीं हुए है। इससे संबंधित जो कुछ कार्य हुए हैं वे इस प्रकार हैं।

1. ओम गुप्ता (2009): प्रसारण और फोटो पत्रकारिता।

पुस्तक प्रसारण और फोटो पत्रकारिता में गुप्ता ने फोटो पत्रकारिता को केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि नैतिक संवाद और सामाजिक जिम्मेदारी का माध्यम बताया है। उन्होंने डिजिटल युग में छवि की भूमिका, उपकरणों की प्रासंगिकता और पत्रकार की संवेदनशीलता को रेखांकित करते हुए इसे मीडिया शिक्षा में अनिवार्य तत्व माना है।

2. सुगुमार, बी. (2010): अंग्रेज़ी पत्रिकाओं में फोटो पत्रकारिता : एक अध्ययन।

यह अध्ययन भारतीय अंग्रेज़ी पत्रिकाओं में फोटो पत्रकारिता की भूमिका और प्रस्तुति की विवेचना करता है। शोध से पता चलता है कि चित्र अब केवल पूरक नहीं, बल्कि संपादकीय अभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम बन चुके हैं। यह दृश्य संप्रेषण के प्रभाव और पाठक की भागीदारी को भी रेखांकित करता है।

3. माइकल चीअर्स (2022): विविधता और तकनीक के युग में फोटो पत्रकारिता का भविष्य।

इस शोध में समकालीन वैश्विक परिदृश्य में फोटो पत्रकारिता की चुनौतियों और संभावनाओं पर चर्चा की गई है। चीअर्स के अनुसार, तकनीकी बदलाव, AI, और सामाजिक विविधता भविष्य की पत्रकारिता की दिशा तय करेंगे। शोध नैतिकता, प्रामाणिकता और समावेशिता की भूमिका को केंद्रीय मानता है।

4. बिंदूर, एन. पी. (2022): स्मार्टफोन फोटोग्राफी और पत्रकारिता की नैतिकता।

बिंदूर का शोध मोबाइल तकनीक द्वारा फोटो पत्रकारिता पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण करता है। स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने जहां कवरेज बढ़ाया, वहीं प्रामाणिकता और व्यावसायिकता को चुनौती दी। लेख फोटो पत्रकारिता के लोकतंत्रीकरण और नैतिक संकट दोनों पर समान रूप से बल देता है।

5. धनंजय चोपड़ा (2025): फोटो पत्रकारिता: बदलती दुनिया, बदलती तकनीक।

लेखक की पुस्तक फोटो पत्रकारिता: बदलती दुनिया, बदलती तकनीक डिजिटल युग में पत्रकारिता के बदलते स्वरूप और नैतिक संकटों का विश्लेषण करती है। वे तकनीकी दक्षता के साथ पत्रकार की सामाजिक संवेदनशीलता और नैतिक जिम्मेदारी को भी आवश्यक मानते हैं, जो शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

शोध क्रियाविधि:

- अनुसंधान पद्धति: सर्वेक्षण
- विश्लेषण विधि: मात्रात्मक एवं गुणात्मक
- सैंपलिंग का प्रकार - उद्देश्यपूर्ण
- सैंपलिंग के लिए उत्तराखण्ड 08 मीडिया संस्थानों के 100 छात्रों द्वारा आंकडा लिया गया जो कि बीए-जे.एम.सी, एम.ए-जे.एम.सी और पी.जी.डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्र थे।
- आंकड़ा संग्रह उपकरण: प्रश्नावली

फोटो पत्रकारिता: अर्थ एवं परिभाषा

फोटो पत्रकारिता पत्रकारिता की वह सशक्त विधा है, जिसमें किसी घटना, परिस्थिति, विचार या भाव को शब्दों के बजाय चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यह केवल कैमरे से किसी दृश्य को कैद करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और समझदारी की प्रक्रिया है। एक फोटो पत्रकार जब किसी दृश्य को अपने कैमरे में संजोता है, तो वह उस क्षण की गहराई, भावनात्मकता और संदर्भ को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक या दर्शक बिना शब्दों के भी समाचार को "महसूस" कर सके।[2]

फोटो पत्रकारिता केवल चित्र लेने की कला नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज़ तैयार करने का माध्यम भी है। चाहे वह युद्ध का मैदान हो, किसी आपदा की पीड़ा, किसी नेता का भाषण, लोकसंस्कृति का उत्सव, या आम आदमी की रोजमर्रा की ज़िंदगी - हर पहलू को फोटो पत्रकारिता न केवल दर्शाती है, बल्कि एक ऐतिहासिक प्रमाण की तरह सुरक्षित भी करती है।

"फोटो पत्रकारिता सूचना का वह माध्यम है जिसमें कैमरा पत्रकार की कलम बन जाता है और उसका लेंस समाज का दर्पण।"- यह कथन इस विधा की गंभीरता को भलीभांति दर्शाता है। जहां आम पत्रकार शब्दों के माध्यम से विचारों को संप्रेषित करता है, वहीं फोटो पत्रकार अपने कैमरे के लेंस से समाज की सच्चाई को उकेरता है। उसका हर चित्र एक कहानी कहता है, एक सवाल उठाता है, या किसी समस्या की ओर संकेत करता है।

डिजिटल युग में फोटो पत्रकारिता की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। अब दर्शक समाचार पढ़ने से अधिक उसे "देखने" की ओर अग्रसर हैं। ऐसे में फोटो पत्रकारिता की भूमिका न केवल पूरक है, बल्कि कई बार यह प्राथमिक सूचना स्रोत भी बन जाती है। यही कारण है कि आज के समय में फोटो पत्रकारिता को समाचार संप्रेषण की आत्मा कहा जा सकता है।

महत्वपूर्ण परिभाषाएँ:

- रघु राय (प्रसिद्ध भारतीय फोटो पत्रकार): “A photograph is not just an image, it’s an experience frozen in time.”
- बी.एस.एन. रेड्डी: “फोटोग्राफी पत्रकार का तीसरा नेत्र है जो ऐसे पहलुओं को उजागर करता है जिन्हें शब्द नहीं कह सकते।”
- डॉ. अर्जुन तिवारी: “फोटो पत्रकारिता दृश्य संप्रेषण का वह माध्यम है जिसमें समाज की धड़कनों को बिना आवाज़ के सुना और समझा जा सकता है।”
- चीनी कहावत: “एक चित्र हजार शब्दों के बराबर होता है।”

आज के डिजिटल युग में फोटो पत्रकारिता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है, जहाँ हर खबर विज़ुअल रूप में पहले पहुँचती है और फिर पाठ्य रूप में।

[2] वाधवा प्रियंका, नैम राकेश-पत्रकारिता के विविध रुप एवं सिद्धांत, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

भारत में फोटो पत्रकारिता का विकास

भारत में फोटो पत्रकारिता का आरंभ छायाचित्रण तकनीक के आगमन के साथ जुड़ा हुआ है। प्रारंभिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में केवल पाठ आधारित सामग्री प्रकाशित की जाती थी, जिसमें समाचारों और लेखों को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था। परंतु 20वीं शताब्दी की शुरुआत में जैसे-जैसे कैमरा तकनीक का विकास हुआ और छपाई की विधियाँ परिष्कृत हुईं, वैसे-वैसे समाचारों के साथ चित्रों का उपयोग भी आरंभ हो गया। इससे समाचारों की प्रस्तुति अधिक सजीव, प्रभावशाली और विश्वसनीय बन गई।[3]

भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई क्रांतिकारी घटनाओं को फोटोग्राफ्स के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया गया, जिससे फोटो पत्रकारिता को एक नया आयाम मिला। देश की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हलचलों को फोटोजर्नलिस्ट्स ने कैमरे की आँख से जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता के बाद यह क्षेत्र और अधिक व्यवस्थित और व्यावसायिक बना। 1980 और 1990 के दशकों में जब भारत में टेलीविजन और प्रिंट मीडिया का तीव्र विस्तार हुआ, तब फोटो पत्रकारिता को नए अवसर मिले। समाचार पत्रों में फ्रंट पेज पर प्रमुख घटनाओं के चित्र प्रकाशित किए जाने लगे। वहीं, पत्रिकाओं ने फीचर फोटो जर्नलिज़्म को भी बढ़ावा दिया।

डिजिटल युग के आगमन और इंटरनेट के प्रसार के बाद, फोटो पत्रकारिता ने एक नई दिशा ली है। अब समाचारों को केवल प्रिंट तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि ऑनलाइन प्लेटफार्मों, न्यूज़ पोर्टल्स और सोशल मीडिया के माध्यम से फोटो पत्रकारिता का प्रभाव कई गुना बढ़ गया है। स्मार्टफोन और डिजिटल कैमरों की उपलब्धता ने इसे जनसामान्य तक पहुँचा दिया है।

आज भारत में फोटो पत्रकारिता न केवल एक कला है, बल्कि यह एक सशक्त सूचना माध्यम बन चुका है, जो तथ्यों को चित्रों के माध्यम से प्रभावशाली तरीके से संप्रेषित करता है।

ऐतिहासिक विकास:

- 1780: जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा 'हिकीज बंगाल गजट' का प्रकाशन (केवल पाठ्य आधारित)।
- 1870-1880: तकनीकी रूप से छपाई में सुधार; फोटोग्राफी का प्रवेश।
- 1900 के बाद: अंग्रेजी व भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों में फोटो का प्रयोग शुरू।
- 1930–1947: स्वतंत्रता संग्राम की तस्वीरें मीडिया में दिखाई देने लगीं; इस दौर में फोटो पत्रकारिता जागरूकता और जन भावनाओं का प्रमुख स्रोत बनी।
- स्वतंत्रता के बाद: होमई व्यारावाला, एस. पॉल, रघु राय, किशोर पारिख जैसे भारतीय फोटोजर्नलिस्ट्स सामने आए, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

उत्तराखंड में स्थिति:

उत्तराखंड में भी क्षेत्रीय समाचार-पत्रों और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में फोटो पत्रकारों की भूमिका लगातार बढ़ी है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ प्राकृतिक आपदाओं, पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक आयोजनों जैसे विषयों में फोटो पत्रकारिता ने सशक्त दस्तावेजी भूमिका निभाई है।

[3] वर्मा डॉ .सुजाता-पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि, आशीष प्रकाशन, कानपुर (पृष्ठ 47)

फोटो पत्रकारिता का महत्व:

आज के युग में जहाँ विज़ुअल मीडिया का वर्चस्व है, वहाँ फोटो पत्रकारिता किसी भी समाचार संस्था की रीढ़ बन गई है। यह पत्रकारिता को जीवंत बनाती है, दर्शकों को दृश्य साक्ष्यों के माध्यम से समाचार की सच्चाई से जोड़ती है और घटनाओं की गंभीरता को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करती है।

प्रमुख क्षेत्र जिनमें फोटो पत्रकारिता महत्वपूर्ण है:

- **सामाजिक क्षेत्र:** सामाजिक मुद्दों को जागरूकता के साथ प्रस्तुत करता है।
- **शैक्षिक क्षेत्र:** छात्रों और शोधार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री के रूप में सहायक।
- **मनोरंजन क्षेत्र:** चलचित्र, मैगज़ीन और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आकर्षक सामग्री प्रदान करता है।
- **शोध क्षेत्र:** दस्तावेजी प्रमाण और केस स्टडी के रूप में उपयोगी।
- **आपदा प्रबंधन:** प्राकृतिक आपदाओं की सटीक और तत्काल जानकारी देता है।
- **पत्रकारिता क्षेत्र:** समाचारों को दृश्य साक्ष्य के रूप में पुष्ट करता है।
- **राजनीतिक क्षेत्र:** जनमत और राजनीतिक घटनाओं का प्रभावी चित्रण करता है।

उत्तराखंड में मीडिया संस्थान और फोटो पत्रकारिता: एक समग्र दृष्टि

उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में लगातार विस्तार देखा जा रहा है। इस राज्य की सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक विविधता इसे पत्रकारिता विशेषकर फोटो पत्रकारिता के लिए एक अनूठा प्रयोगस्थल बनाती है। पर्वतीय क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक एवं पर्यावरणीय गतिविधियाँ, आपदाएँ, जनआंदोलन और ग्रामीण जीवन — यह सभी फोटो पत्रकारिता को गहराई और विविधता प्रदान करने वाले विषय हैं। ऐसे में उत्तराखंड में मीडिया शिक्षण संस्थानों का विकास न केवल शैक्षणिक आवश्यकता है, बल्कि सामाजिक दस्तावेज़ीकरण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उत्तराखंड में कई विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय अपने यहाँ मीडिया विभाग व संकाय प्रारंभ कर रहे हैं। इन संस्थानों में पत्रकारिता के विविध पहलुओं को सिखाने के साथ-साथ फोटो पत्रकारिता को भी पाठ्यक्रम का भाग बनाया जा रहा है। यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज़, देहरादून द्वारा प्रस्तावित नए मीडिया कार्यक्रमों में फोटोग्राफी एक प्रमुख विषय के रूप में शामिल है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक और दृश्य माध्यमों की शिक्षा को अब गंभीरता से लिया जा रहा है।[4]

इसके अलावा, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, दून विश्वविद्यालय, देहरादून, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी, आईएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी, हिमगिरि ज़ी यूनिवर्सिटी जैसे संस्थान पत्रकारिता और जनसंचार के विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित कर रहे हैं। इनमें से कुछ संस्थानों में फोटो पत्रकारिता या फोटोग्राफी को स्वतंत्र पाठ्यक्रम के रूप में, तो कई में व्यावहारिक भाग के रूप में शामिल किया गया है।

हालाँकि, सभी प्रयासों के बावजूद उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा के क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। ओंकारानंद इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, ऋषिकेश में पत्रकारिता विभाग का बंद होना, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता कार्यक्रम का समाप्त होना और उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय में मीडिया से जुड़े पाठ्यक्रमों का निलंबन यह दर्शाता है कि इन संस्थानों को आवश्यक संसाधनों, फैकल्टी और नीतिगत समर्थन की कमी झेलनी पड़ रही है। फोटो पत्रकारिता एक ऐसी विधा है जो दृश्य संप्रेषण की शक्ति के माध्यम से समाज के भीतर

[4] Rajat Pandey, & Prof. (Dr.) Sukhnandan Singh. (2025). Uchch Shikshan Sansthanon Mein Patrakarita Evam Jansanchar Vishay Ke Shaikshanik Star Ka Adhyayan Evam Avalokan: Uttarakhand Rajya Ke Vishesh Sandarbh Mein". Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.15147294

गहराई से प्रवेश करती है। उत्तराखंड जैसे राज्य में, जहाँ आपदाएँ (जैसे भूस्खलन, बादल फटना आदि), पर्यावरणीय संघर्ष, धार्मिक यात्राएँ और पर्यटन से जुड़ी कहानियाँ प्रमुख हैं, वहाँ फोटो पत्रकारिता न केवल समाचार का हिस्सा है, बल्कि समाज की संवेदनशीलता और जिजीविषा का प्रतिबिंब भी है। इसके लिए आवश्यक है कि मीडिया संस्थानों में फोटोग्राफी व फोटो पत्रकारिता को समर्पित पाठ्यक्रमों, प्रयोगशालाओं, कैमरा प्रशिक्षण और फील्ड असाइनमेंट की पर्याप्त व्यवस्था हो।

निष्कर्षतः, उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा और विशेष रूप से फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र में संभावनाएँ असीमित हैं। आवश्यकता है उन्हें एक दिशा देने की, संस्थागत आधार प्रदान करने की और व्यावहारिक अनुभव से जोड़ने की। यदि इन संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और समर्पित प्रशिक्षण की व्यवस्था हो, तो उत्तराखंड न केवल मीडिया शिक्षा का एक सशक्त केंद्र बन सकता है, बल्कि फोटो पत्रकारिता में भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बना सकता है।

आंकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या एवं परिचर्चा

आंकड़ों का विश्लेषण:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुख्य रूप से उत्तराखंड राज्य के गढ़वाल क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभागों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की राय को संकलित किया गया है। शोध के लिए कुल 100 विद्यार्थियों के उत्तरों को आधार बनाया गया, जिनमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्र सम्मिलित हैं।

इस शोध का विशेष फोकस "फोटो पत्रकारिता" विषय पर रहा, इसलिए प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों की रुचि, पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, प्रयोगात्मक सुविधाओं, शिक्षण विधियों, प्लेसमेंट की स्थिति और व्यावसायिक संभावनाओं के बारे में विशेष जानकारी एकत्र की गई।

उत्तरदाताओं में से 62% छात्र ऐसे थे जिन्होंने फोटो पत्रकारिता को अपने कोर्स में पढ़ा है या बतौर वैकल्पिक विषय चुना है, जबकि शेष 38% छात्रों ने फोटो पत्रकारिता को एक रुचिकर और व्यावसायिक दृष्टि से उपयोगी विधा माना, परन्तु संस्थान में उसकी समुचित व्यवस्था न होने की बात कही।

व्याख्या एवं परिचर्चा:

1. आपके पाठ्यक्रम में फोटो जर्नलिज्म का पेपर है?

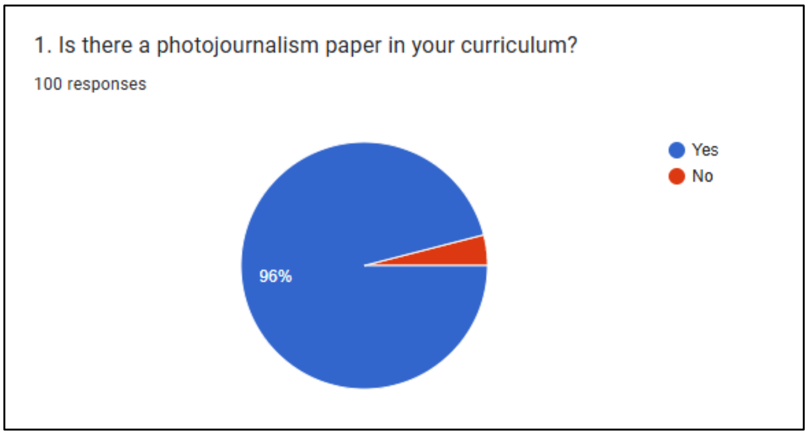

इस प्रश्न पर 100 में से 96% विद्यार्थियों ने बताया कि उनके पाठ्यक्रम में फोटो जर्नलिज्म विषय शामिल है, जबकि केवल 4% विद्यार्थियों ने नकारात्मक उत्तर दिया। इसका अर्थ है, अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में फोटो जर्नलिज्म पाठ्यक्रम का भाग है।

2. क्या आपको लगता है कि फोटो जर्नलिज्म में करियर बनाने के लिए उच्च शिक्षा आवश्यक है?

98 विद्यार्थियों में से 90.8% विद्यार्थियों का मानना है कि इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए उच्च शिक्षा आवश्यक है, जबकि 9.2% ने 'नहीं' विकल्प चुना। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकतर विद्यार्थी उच्च शिक्षा को इस पेशे के लिए जरूरी मानते हैं।

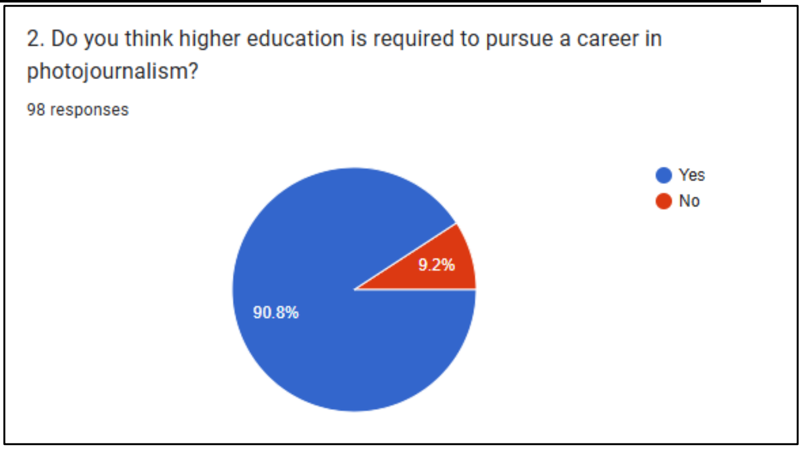

3. क्या आपके पास फोटो जर्नलिज्म पेपर पढ़ाने के लिए शिक्षक उपलब्ध हैं?

100 प्रतिभागियों में से 98% विद्यार्थियों का कहना है कि उनके संस्थान में फोटो जर्नलिज्म पढ़ाने के लिए शिक्षक उपलब्ध हैं, वहीं केवल 2% ने 'नहीं' कहा। यह संकेत करता है कि प्रायः सभी जगहों पर शिक्षकों की उपलब्धता है।

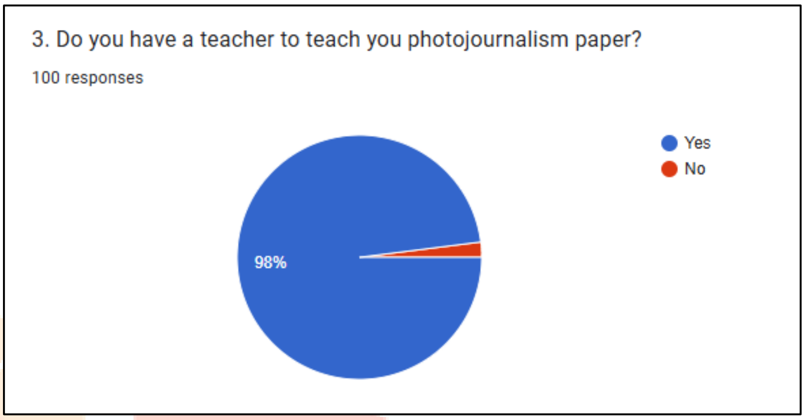

4. क्या आपके विभाग में DSLR कैमरा एवं अन्य उपकरणों की व्यवस्था अभ्यास हेतु की गई है?

100 विद्यार्थियों में केवल 6% ने 'हां' कहा, जबकि 94% ने 'नहीं'। इसका साफ मतलब है कि विद्यार्थियों को विभागीय स्तर पर फोटो जर्नलिज्म का व्यावहारिक अभ्यास करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं मिल रहे हैं।

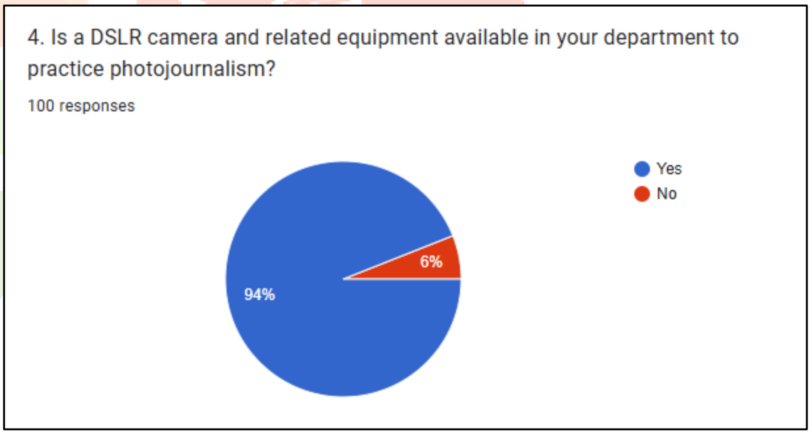

5. क्या आपके पास निजी DSLR/Mirrorless अथवा किसी प्रकार का कैमरा है?

100 प्रतिभागियों में से केवल 22% के पास कैमरा है, 41% ऐसा कैमरा खरीदने की सोच रहे हैं, जबकि 37% के पास कोई कैमरा नहीं है। अर्थात् अधिकांश विद्यार्थी अभी खुद का कैमरा नहीं रखते।

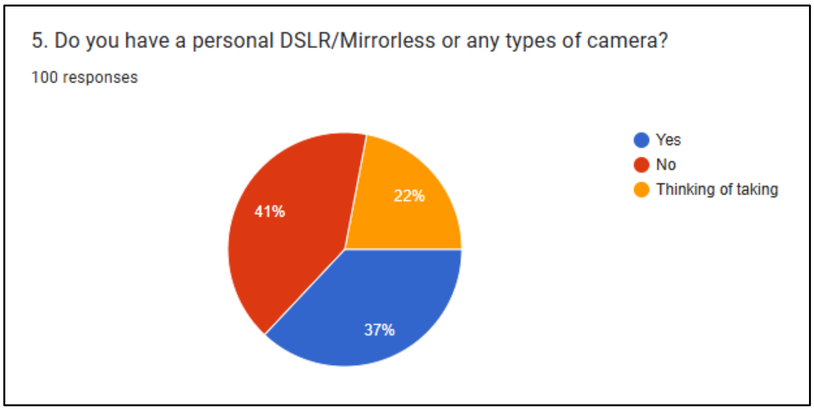

6. क्या आप मानते हैं कि फोटो जर्नलिज्म एक सम्मानजनक पेशा है और आपको समाज में अलग पहचान दे सकता है?

100 में से 86% विद्यार्थियों ने इसे सम्मानजनक पेशा माना और अलग पहचान का साधन बताया, 11% ने असहमति जताई और 3% अपनी राय नहीं बना सके। इससे पेशे की सकारात्मक छवि का पता चलता है।

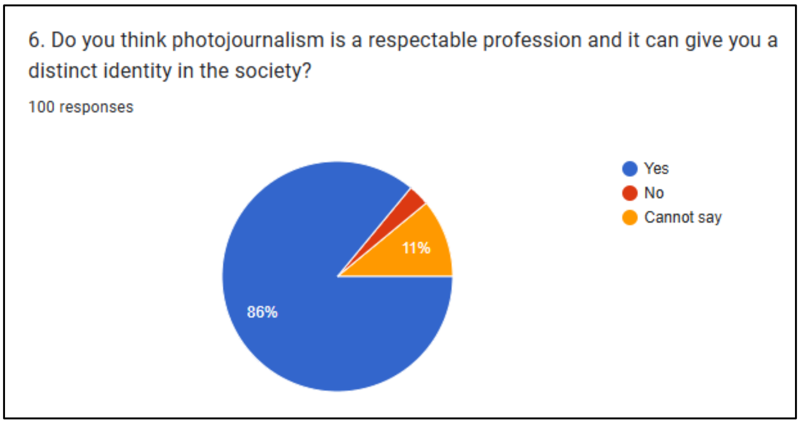

7. क्या फोटो जर्नलिज्म के लिए विशेष/प्रायोगिक प्रशिक्षण अनिवार्य है?

100 विद्यार्थियों में से 96% का यही मानना है कि फोटो जर्नलिज्म के लिए विशेष रूप से प्रायोगिक प्रशिक्षण जरूरी है, जबकि 4% ने असहमति जताई या उत्तर नहीं दिया। इससे क्षेत्र में व्यावहारिक दक्षता की प्राथमिकता दिखती है।

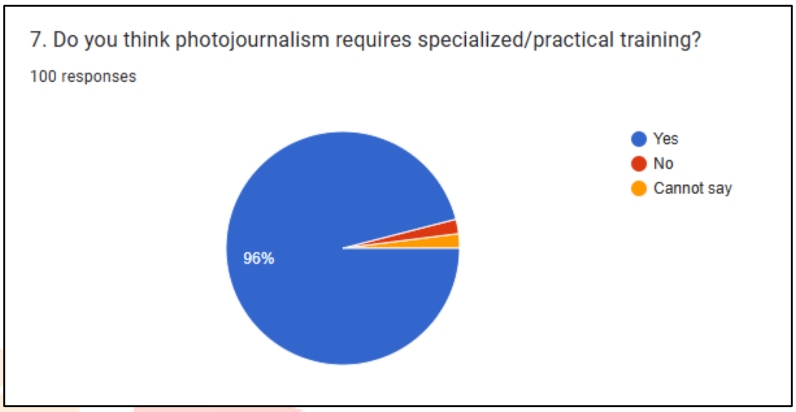

8. क्या आप फोटो जर्नलिस्ट की जिम्मेदारियां एवं गुण जानते हैं?

100 विद्यार्थियों में से 92% ने हां कहा, 8% ने नहीं या अस्पष्ट उत्तर दिया। इसका अभिप्राय है कि अधिकतर विद्यार्थियों को पेशे की बुनियादी बातों की जानकारी है।

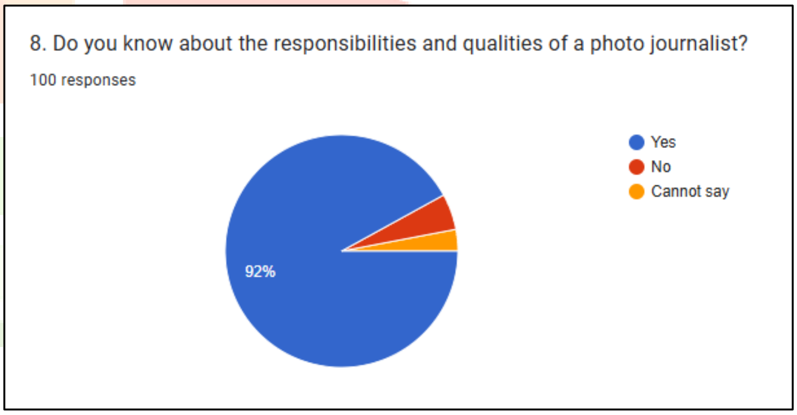

9. क्या आप फोटो जर्नलिज्म के लिए निर्धारित नैतिकताओं से परिचित हैं?

100 में से 85% विद्यार्थियों ने हां कहा, 8% ने नहीं और 7% ने 'कह नहीं सकते' विकल्प चुना। इससे पता चलता है कि अधिकांश को पेशे की नैतिक सीमाओं की समझ है, हालांकि कुछ विद्यार्थी इस बारे में जागरूक नहीं हैं।

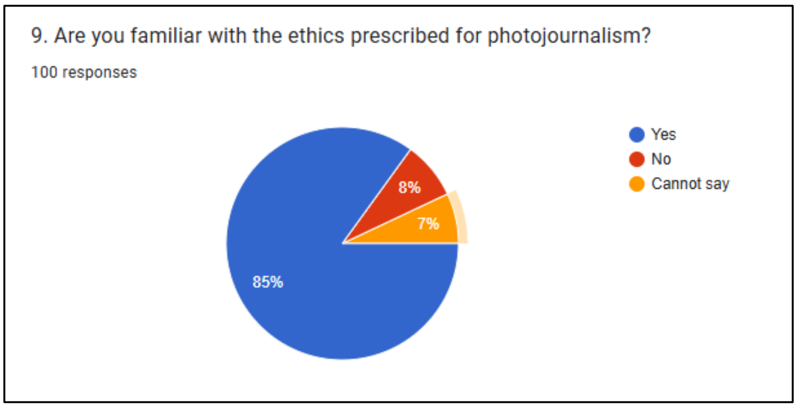

10. क्या आपके विभाग में फोटो जर्नलिज्म से जुड़े गेस्ट लेक्चर/कार्यशाला/इंटर्नशिप आयोजित की जाती है?

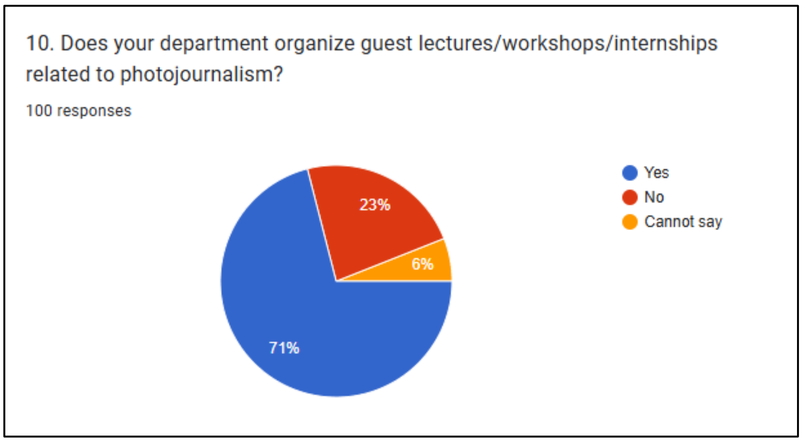

100 में से 71% विद्यार्थियों ने बताया कि ऐसी गतिविधियां विभाग में होती हैं, 23% ने बताया कि नहीं होती और 6% को जानकारी नहीं है। अतः अधिकतर संस्थानों द्वारा फोटो जर्नलिज्म के व्यावसायिक पक्ष को बढ़ावा देने की पहल की जा रही है।

इन आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा के अंतर्गत फोटो पत्रकारिता का समावेश तो हो गया है, परंतु उसका क्रियान्वयन अभी अधूरा और सीमित है। संस्थानों की संरचनात्मक सीमाएं, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, और इंडस्ट्री लिंकेज की अनुपस्थिति के कारण विद्यार्थी इस विधा में न तो गहराई से प्रशिक्षण ले पा रहे हैं, न ही पेशेवर अवसरों से जुड़ पा रहे हैं।

आज जब डिजिटल मीडिया में फोटोज और विज़ुअल स्टोरी की मांग सबसे अधिक है, तब यह आवश्यक हो गया है कि मीडिया संस्थान फोटो पत्रकारिता को केवल एक वैकल्पिक विषय की तरह न पढ़ाएं, बल्कि इसे व्यावहारिक, तकनीकी और व्यवसायिक दृष्टिकोण से विकसित करें।

फोटो पत्रकारिता को समर्पित कार्यशालाएं, फील्ड असाइनमेंट, इंडस्ट्री से संवाद, और कैमरा हैंडलिंग के नियमित अभ्यास को मीडिया पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

मुख्य विश्लेषण बिंदु:

- **पाठ्यक्रम:** अधिकांश विद्यार्थियों ने बताया कि पाठ्यक्रम में फोटो पत्रकारिता को स्थान तो दिया गया है, परंतु यह पाठ्यक्रम वर्तमान तकनीकी प्रगति के अनुरूप अद्यतन नहीं है। करीब 71% विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें DSLR कैमरा, मोबाइल फोटो पत्रकारिता, डिजिटल इमेजिंग आदि आधुनिक तकनीकों की सैद्धांतिक जानकारी तो दी गई है, लेकिन उनका प्रायोगिक अभ्यास न के बराबर हुआ।
- **प्लेसमेंट:** फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्लेसमेंट के अवसर सीमित हैं। उत्तरदाताओं में से केवल 18% ने बताया कि उनके संस्थान की ओर से उन्हें किसी न्यूज़ एजेंसी, डिजिटल मीडिया हाउस या पत्रिका में इंटर्नशिप/प्लेसमेंट का अवसर मिला। अधिकांश छात्रों ने यह स्वीकारा कि उन्हें स्वतंत्र रूप से ही फोटोजेनिक पोर्टफोलियो बनाकर फ्रीलांसिंग या डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अपनी पहचान बनानी पड़ी।
- **संरचनात्मक ढांचा:** यह सबसे चुनौतीपूर्ण पक्ष रहा। 100 में से 82 विद्यार्थियों ने कहा कि उनके संस्थानों में फोटो पत्रकारिता के लिए न तो उच्च गुणवत्ता के कैमरे उपलब्ध हैं और न ही कोई डार्करूम या इमेज प्रोसेसिंग लैब। केवल कुछ चुनिंदा संस्थानों—जैसे दून यूनिवर्सिटी या IMS यूनिसन—में ही बुनियादी संसाधन मौजूद हैं।
- **शिक्षण पद्धति:** शिक्षण पद्धति अभी भी पारंपरिक है। 56% छात्रों ने कहा कि शिक्षकों की फोटो पत्रकारिता में विशेष दक्षता नहीं है। वे सामान्य पत्रकारिता विषयों की भांति ही फोटो पत्रकारिता पढ़ा देते हैं, जिससे

विद्यार्थियों को फील्ड रिपोर्टिंग, विज़ुअल स्टोरीटेलिंग, फोटो कैप्शनिंग आदि महत्वपूर्ण आयामों की जानकारी अधूरी ही रह जाती है।

- **प्रयोगात्मक अनुभव:** फोटो पत्रकारिता जैसी विधा व्यावहारिक अनुभव पर आधारित होती है, परंतु उत्तराखंड के अधिकांश मीडिया शिक्षण संस्थानों में इसका अभाव देखा गया। केवल 23% विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें कॉलेज की पत्रिका, न्यूज बुलेटिन या किसी मीडिया प्रोजेक्ट के लिए फोटोग्राफ्स लेने का अवसर मिला। शेष विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें फील्ड असाइनमेंट, रियल टाइम इवेंट कवरेज, या स्टूडियो आधारित कार्यशालाएं नहीं दी गईं।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र के पत्रकारिता एवं जनसंचार से जुड़े 100 विद्यार्थियों के उत्तरों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में फोटो पत्रकारिता को पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया गया है, तथा विद्यार्थी इसे एक सम्मानजनक और संभावनाओं से परिपूर्ण करियर विकल्प के रूप में देख रहे हैं। लगभग 96% प्रतिभागियों ने इसकी पाठ्यचर्या में उपस्थिति की पुष्टि की, जबकि 90% से अधिक विद्यार्थियों ने इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा को आवश्यक बताया, जो उनकी सजगता और करियर के प्रति गंभीर दृष्टिकोण को दर्शाता है।

फोटो पत्रकारिता शिक्षण हेतु शिक्षकों की उपलब्धता लगभग सभी संस्थानों में है, परंतु एक गंभीर समस्या व्यावहारिक संसाधनों की कमी के रूप में सामने आई। 94% विद्यार्थियों के अनुसार संस्थानों में DSLR कैमरा जैसे उपकरणों की समुचित व्यवस्था नहीं है, जिससे व्यावहारिक प्रशिक्षण बाधित होता है। इस कमी को और गहरा करती है यह स्थिति कि केवल 22% विद्यार्थियों के पास निजी कैमरा है। अधिकांश प्रतिभागी यह मानते हैं कि फोटो पत्रकारिता में प्रायोगिक प्रशिक्षण अनिवार्य है, जिससे स्पष्ट है कि विद्यार्थी सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान से संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि उन्हें वास्तविक अनुभव की आवश्यकता महसूस होती है। साथ ही, 92% विद्यार्थियों को फोटो पत्रकारिता के गुणों और उत्तरदायित्वों की जानकारी है, और 85% नैतिक मानकों से भी परिचित हैं, जो पेशे के प्रति उनकी जागरूकता को प्रमाणित करता है।

इस क्षेत्र से जुड़ी गेस्ट लेक्चर, कार्यशालाएं और इंटर्नशिप की पहल 71% संस्थानों में होती है, जिससे विद्यार्थियों को व्यावसायिक दुनिया से परिचित होने का अवसर मिलता है, हालांकि शेष संस्थानों में इस दिशा में काम किए जाने की आवश्यकता है।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तराखंड में फोटो पत्रकारिता को अकादमिक रूप से महत्व तो दिया जा रहा है, परंतु व्यावहारिक संसाधनों और प्रशिक्षण की गंभीर कमी है, जिसे दूर किए बिना इस क्षेत्र में संपूर्ण दक्षता प्राप्त कर पाना कठिन होगा। नीति निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों को चाहिए कि वे फोटो पत्रकारिता की पाठ्यचर्या के साथ-साथ उपकरण, प्रशिक्षण, इंटर्नशिप और विशेषज्ञों की सहभागिता को सुनिश्चित करें, ताकि यह विधा विद्यार्थियों के लिए सशक्त करियर विकल्प बन सके।

संदर्भ सूची:-

शोध पत्र-

Bock, M.A. (2008). Together in the scrum: practicing news photography for television, print, and broadband. Visual Communication Quarterly 15(3): 169–179.

Tewari, P. (2015). Evolutions in photojournalism in India (2001 to 2011). Online Journal of Communication and Media Technologies, 5(2). https://www.ojcmt.net/download/evolutions-in-photojournalism-in-india-2001-to-2011.pdf

Trikha, Poorva. (2017). Capturing Conflict from Below and Within: A Profile of Photojournalism and Photojournalists in Kashmir. Criterion. 8. 092-102.

Chatterjee, M., Richard Stengel, Carol Szathmari, William Simpson, Roger Fenton, Mathew Brady, Jacob Riis, Ross Collins, Frank Luther Mott, Henri Cartier-Bresson, & Erich Salomon. (2021). Photojournalism. Time, 174–174, 4–4. http://nilambarrath.com/photojournalist_dr._mrinal_chatterjee.pdf

Pandey, Rajat & Vashishta, Smita & Kumari, Deepshikha. (2025). Status of Media Education in India: A Review Study. The Review of Contemporary Scientific and Academic Studies. http://doi.org/10.55454/rcsas.5.02.2025.012

Rajat Pandey, & Prof. (Dr.) Sukhnandan Singh. (2025). Uchch Shikshan Sansthanon Mein Patrakarita Evam Jansanchar Vishay Ke Shaikshanik Star Ka Adhyayan Evam Avalokan: Uttarakhand Rajya Ke Vishesh Sandarbh Mein". Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.15147294

पुस्तकें-

उपाध्याय डॉ. अनिल कुमार-पत्रकारिता और जनसंचार: सिद्धांत एवं विकास, भारती प्रकाशन, वाराणसी-2005 (पृष्ठ 7)

उपाध्याय डॉ. अनिल कुमार-पत्रकारिता और जनसंचार: सिद्धांत एवं विकास, भारती प्रकाशन, वाराणसी-2005 (पृष्ठ 8)

वर्मा डॉ. सुजाता-पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि, आशीष प्रकाशन, कानपुर (पृष्ठ 47)

तिवारी डॉ. अर्जुन- उपकार-जनसंचार, समग्र, उपकार प्रकाशन, आगरा-2 (पृष्ठ 400)

वाधवा प्रियंका, नैम राकेश-पत्रकारिता के विविध रुप एवं सिद्धांत, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली,2008 (पृष्ठ 52)

नारायणन् के.पी.-सम्पादन कला, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,2005 (पृष्ठ 165)

सप्रू सुभाष-फोटो पत्रकारिता, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला (पृष्ठ 12,13)

वेबसाइट –

https://indiaai.gov.in/article/capturing-the-news-in-a-new-light-how-ai-imagery-is-revolutionizing-photojournalism-in-india

https://www.indianetzone.com/photojournalism_or_press_photography

https://in.indeed.com/career-advice/career-development/what-is-photojournalism

https://artsandculture.google.com/story/kulwant-roy-a-pioneer-of-indian-photojournalism-india-photo-archive-foundation/DwXxpdm9hVJHIQ?hl=en